



Mr.suraj prakash purohit

26 Sep 1996

09:43 AM

Pali Marwar

Model: All-Dosha-Report

Order No: 120680801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 26/09/1996
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 09:43:00 घंटे
इष्ट _____: 08:11:04 घटी
स्थान _____: Pali Marwar
राज्य _____: Rajasthan
देश _____: India

अक्षांश _____: 25:46:00 उत्तर
रेखांश _____: 73:26:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:36:16 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 09:06:44 घंटे
वेलान्तर _____: 00:08:42 घंटे
साम्पातिक काल _____: 09:27:44 घंटे
सूर्योदय _____: 06:26:34 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:28:08 घंटे
दिनमान _____: 12:01:34 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 09:32:34 कन्या
लग्न के अंश _____: 22:17:07 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: कुम्भ - शनि
नक्षत्र-चरण _____: पू०भाद्रपद - 3
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: गण्ड
करण _____: वणिज
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सिंह
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: दा-दामोदर
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1918	आश्विन	4
पंजाबी	संवत : 2053	आश्विन	11
बंगाली	सन् : 1403	आश्विन	10
तमिल	संवत : 2053	पुरुटासी	11
केरल	कोल्लम : 1172	कन्नी	10
नेपाली	संवत : 2053	आश्विन	11
चैत्रादि	संवत : 2053	भाद्रपद	शुक्ल 14
कार्तिकादि	संवत : 2053	भाद्रपद	शुक्ल 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 14
 तिथि समाप्ति काल _____ : 11:07:43
 जन्म तिथि _____ : 14
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पू०भाद्रपद
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 20:32:57 घंटे
 जन्म योग _____ : पू०भाद्रपद
 सूर्योदय कालीन योग _____ : गण्ड
 योग समाप्ति काल _____ : 20:34:19 घंटे
 जन्म योग _____ : गण्ड
 सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
 करण समाप्ति काल _____ : 11:07:43 घंटे
 जन्म करण _____ : वणिज
 भयात _____ : 27:32:19
 भभोग _____ : 54:37:09
 भोग्य दशा काल _____ : गुरु 7 वर्ष 10 मा 29 दि

घात चक्र

मास _____ : चैत्र
 तिथि _____ : 3-8-13
 दिन _____ : गुरुवार
 नक्षत्र _____ : आर्द्रा
 योग _____ : गण्ड
 करण _____ : किंस्तुघ्न
 प्रहर _____ : 3
 वर्ग _____ : गरुड़
 लग्न _____ : मिथुन
 सूर्य _____ : वृष
 चन्द्र _____ : धनु
 मंगल _____ : मिथुन
 बुध _____ : वृष
 गुरु _____ : कर्क
 शुक्र _____ : सिंह
 शनि _____ : मेष
 राहु _____ : कन्या

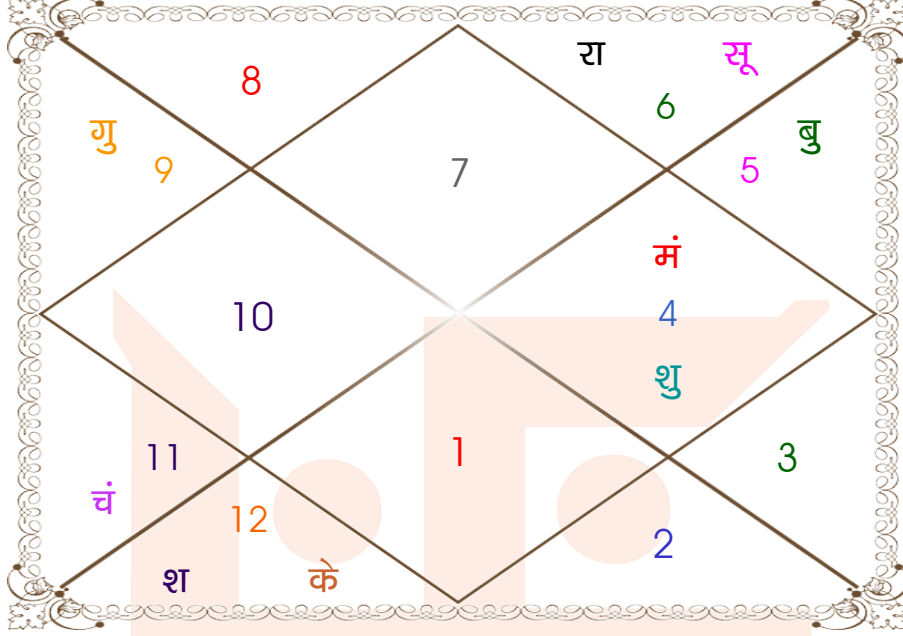


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

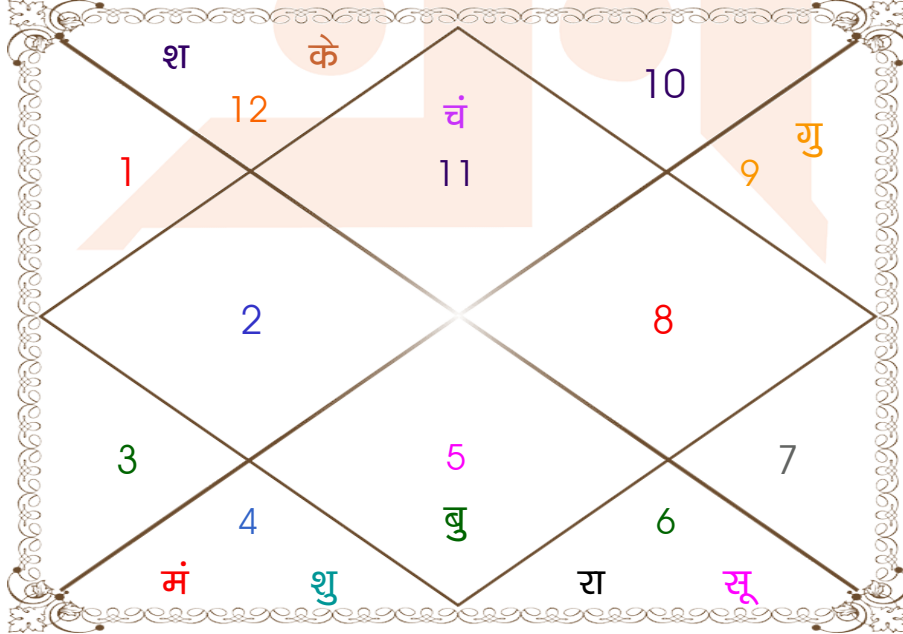


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

के श			
चं			शु मं
			बु
गु		ल	रा सू

लग्न कुंडली

		के श	
		चं	
शु मं			
बु	सू रा	ल	गु

विंशोत्तरी
गुरु 7वर्ष 10मा 29दि
गुरु

26/09/1996

26/08/2108

गुरु	25/08/2004
शनि	26/08/2023
बुध	25/08/2040
केतु	26/08/2047
शुक्र	26/08/2067
सूर्य	26/08/2073
चन्द्र	26/08/2083
मंगल	26/08/2090
राहु	26/08/2108

योगिनी
भ्रामरी 1वर्ष 11मा 22दि
पिंगला

18/09/2025

19/09/2027

पिंगला	29/10/2025
धान्या	29/12/2025
भ्रामरी	20/03/2026
भद्रिका	29/06/2026
उल्का	29/10/2026
सिद्धा	20/03/2027
संकटा	29/08/2027
मंगला	19/09/2027



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

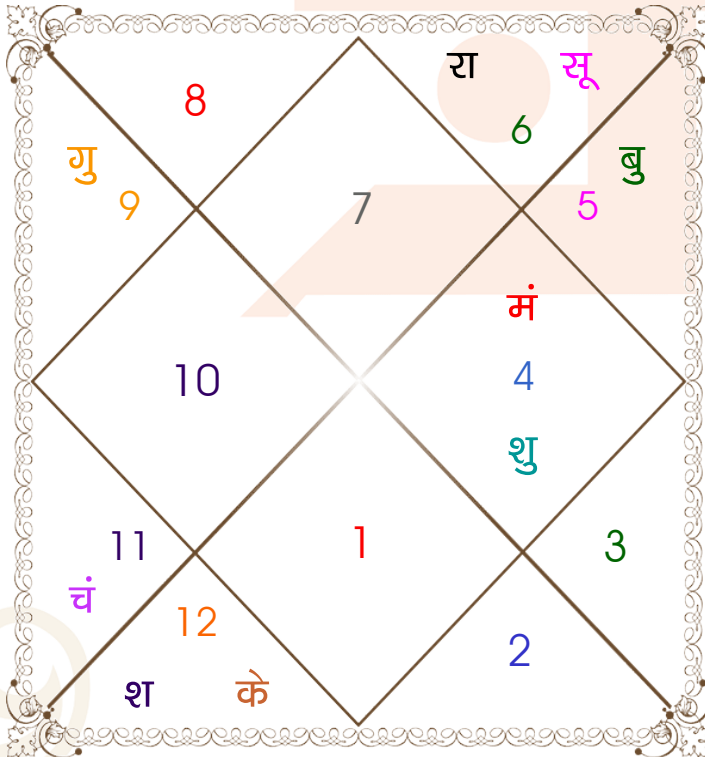
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	22:17:07	313:09:11	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	---
सूर्य			कन्या	09:32:34	00:58:49	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	सम राशि
चंद्र			कुंभ	26:44:20	14:39:01	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	सम राशि
मंगल			कर्क	16:16:51	00:36:28	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	नीच राशि
बुध	व		सिंह	25:12:38	00:05:28	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	मित्र राशि
गुरु			धनु	14:48:27	00:04:11	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	स्वराशि
शुक्र			कर्क	27:04:12	01:08:00	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	गुरु	शत्रु राशि
शनि	व		मीन	10:12:09	00:04:41	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	शुक्र	सम राशि
राहु	व		कन्या	14:10:53	00:00:25	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	14:10:53	00:00:25	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	मूलत्रिकोण
हर्ष	व		मक	06:54:34	00:00:41	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	बुध	---
नेप	व		मक	01:11:41	00:00:20	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	---
प्लूटो			वृश्चि	07:07:07	00:01:29	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	---
दशम भाव			कर्क	25:42:14	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	राहु	--

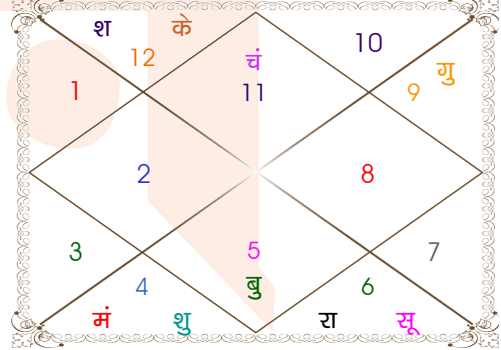
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:48:44

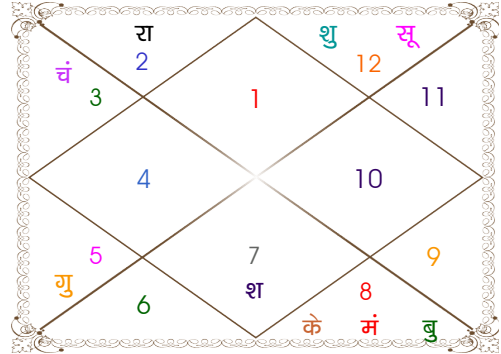
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 07:51:18	तुला 22:17:07
2	वृश्चिक 07:51:18	वृश्चिक 23:25:29
3	धनु 08:59:40	धनु 24:33:52
4	मकर 10:08:03	मकर 25:42:14
5	कुम्भ 10:08:03	कुम्भ 24:33:52
6	मीन 08:59:40	मीन 23:25:29
7	मेष 07:51:18	मेष 22:17:07
8	वृष 07:51:18	वृष 23:25:29
9	मिथुन 08:59:40	मिथुन 24:33:52
10	कर्क 10:08:03	कर्क 25:42:14
11	सिंह 10:08:03	सिंह 24:33:52
12	कन्या 08:59:40	कन्या 23:25:29

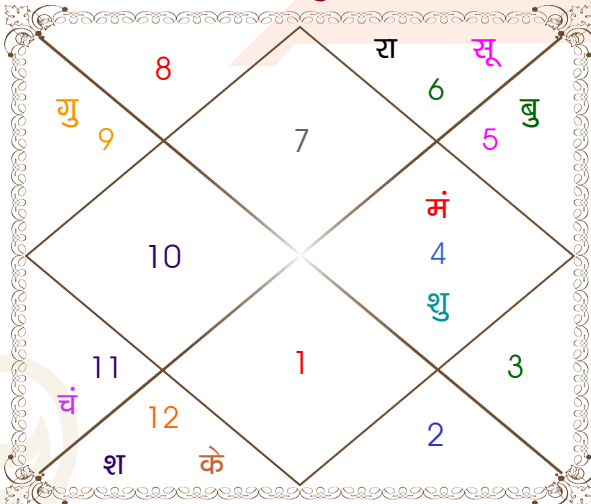
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला 22:17:07	22:17:07
2	वृश्चिक 21:37:26	21:37:26
3	धनु 22:53:20	22:53:20
4	मकर 25:42:14	25:42:14
5	कुम्भ 27:58:37	27:58:37
6	मीन 27:04:11	27:04:11
7	मेष 22:17:07	22:17:07
8	वृष 21:37:26	21:37:26
9	मिथुन 22:53:20	22:53:20
10	कर्क 25:42:14	25:42:14
11	सिंह 27:58:37	27:58:37
12	कन्या 27:04:11	27:04:11

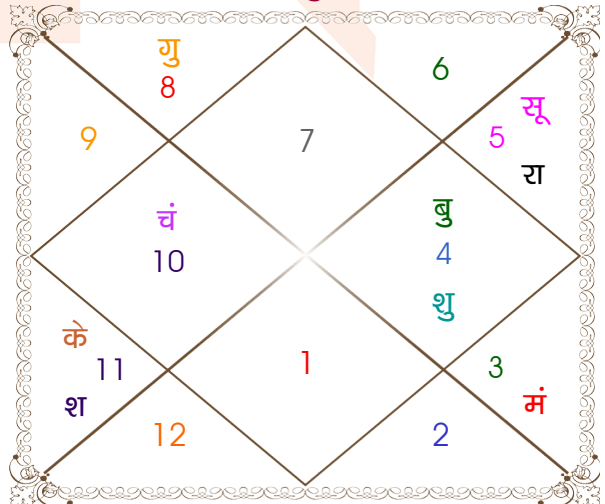
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



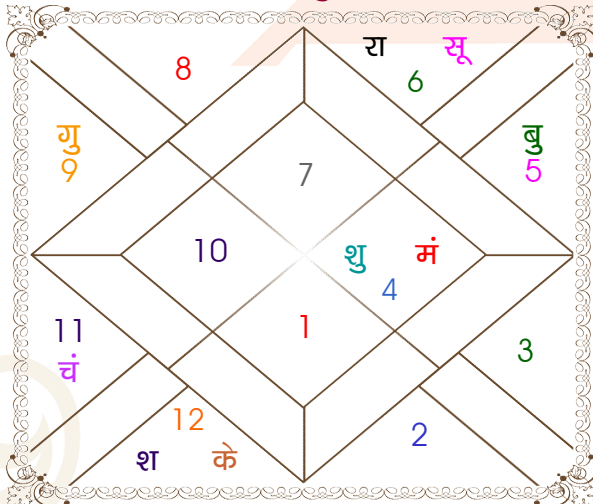
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	वृद्ध शान्त प्रकाश 2.03 65 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	मृत शक्त नृत्यलिप्सा 6.82 69 %
मंगल	मातृ	भातृ	युवा भीत प्रकाश 0.33 48 %
बुध	भातृ	ज्ञाति	मृत मुदित आगम 5.93 89 %
गुरु	पुत्र	धन	युवा स्वस्थ निद्रा 1.18 73 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	बाल खल नृत्यलिप्सा 1.07 78 %
शनि	ज्ञाति	आयु	वृद्ध शक्त निद्रा 1.33 50 %
राहु	---	ज्ञान	युवा स्वस्थ आगम 0.00 64 %
केतु	---	मोक्ष	युवा स्वस्थ नृत्यलिप्सा 0.00 64 %
कुल			18.68

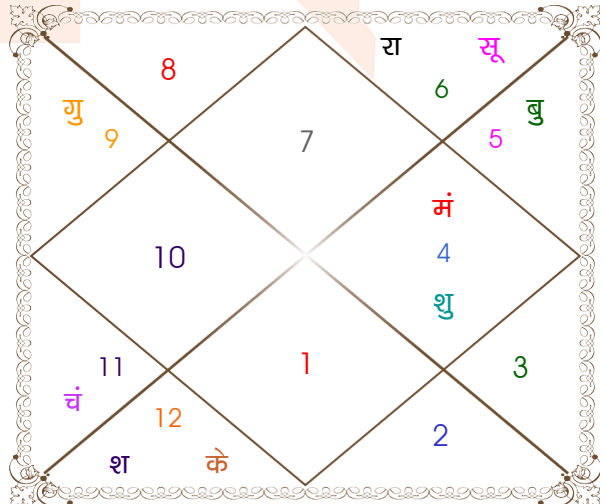
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा

चलित कुंडली



लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 7 वर्ष 10 मास 29 दिन

गुरु 16 वर्ष 26/09/1996 25/08/2004	शनि 19 वर्ष 25/08/2004 26/08/2023	बुध 17 वर्ष 26/08/2023 25/08/2040	केतु 7 वर्ष 25/08/2040 26/08/2047	शुक्र 20 वर्ष 26/08/2047 26/08/2067
00/00/0000	शनि 29/08/2007	बुध 22/01/2026	केतु 21/01/2041	शुक्र 26/12/2050
00/00/0000	बुध 08/05/2010	केतु 19/01/2027	शुक्र 24/03/2042	सूर्य 26/12/2051
00/00/0000	केतु 17/06/2011	शुक्र 19/11/2029	सूर्य 29/07/2042	चंद्र 26/08/2053
26/09/1996	शुक्र 17/08/2014	सूर्य 25/09/2030	चंद्र 27/02/2043	मंगल 26/10/2054
शुक्र 09/03/1999	सूर्य 30/07/2015	चंद्र 25/02/2032	मंगल 27/07/2043	राहु 25/10/2057
सूर्य 26/12/1999	चंद्र 27/02/2017	मंगल 21/02/2033	राहु 13/08/2044	गुरु 25/06/2060
चंद्र 26/04/2001	मंगल 08/04/2018	राहु 10/09/2035	गुरु 20/07/2045	शनि 26/08/2063
मंगल 02/04/2002	राहु 12/02/2021	गुरु 16/12/2037	शनि 29/08/2046	बुध 26/06/2066
राहु 25/08/2004	गुरु 26/08/2023	शनि 25/08/2040	बुध 26/08/2047	केतु 26/08/2067
सूर्य 6 वर्ष 26/08/2067 26/08/2073	चंद्र 10 वर्ष 26/08/2073 26/08/2083	मंगल 7 वर्ष 26/08/2083 26/08/2090	राहु 18 वर्ष 26/08/2090 26/08/2108	गुरु 16 वर्ष 26/08/2108 00/00/0000
सूर्य 14/12/2067	चंद्र 26/06/2074	मंगल 22/01/2084	राहु 08/05/2093	गुरु 14/10/2110
चंद्र 13/06/2068	मंगल 25/01/2075	राहु 09/02/2085	गुरु 02/10/2095	शनि 27/04/2113
मंगल 19/10/2068	राहु 26/07/2076	गुरु 16/01/2086	शनि 08/08/2098	बुध 03/08/2115
राहु 13/09/2069	गुरु 25/11/2077	शनि 24/02/2087	बुध 25/02/2101	केतु 09/07/2116
गुरु 02/07/2070	शनि 26/06/2079	बुध 22/02/2088	केतु 15/03/2102	शुक्र 27/09/2116
शनि 14/06/2071	बुध 25/11/2080	केतु 20/07/2088	शुक्र 15/03/2105	00/00/0000
बुध 19/04/2072	केतु 26/06/2081	शुक्र 19/09/2089	सूर्य 07/02/2106	00/00/0000
केतु 25/08/2072	शुक्र 24/02/2083	सूर्य 25/01/2090	चंद्र 09/08/2107	00/00/0000
शुक्र 26/08/2073	सूर्य 26/08/2083	चंद्र 26/08/2090	मंगल 26/08/2108	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 7 वर्ष 11 मा 6 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध 26/08/2023 22/01/2026	बुध - केतु 22/01/2026 19/01/2027	बुध - शुक्र 19/01/2027 19/11/2029	बुध - सूर्य 19/11/2029 25/09/2030	बुध - चंद्र 25/09/2030 25/02/2032
बुध 29/12/2023 केतु 18/02/2024 शुक्र 14/07/2024 सूर्य 27/08/2024 चंद्र 08/11/2024 मंगल 29/12/2024 राहु 10/05/2025 गुरु 04/09/2025 शनि 22/01/2026	केतु 12/02/2026 शुक्र 13/04/2026 सूर्य 01/05/2026 चंद्र 31/05/2026 मंगल 22/06/2026 राहु 15/08/2026 गुरु 02/10/2026 शनि 29/11/2026 बुध 19/01/2027	शुक्र 10/07/2027 सूर्य 31/08/2027 चंद्र 25/11/2027 मंगल 25/01/2028 राहु 28/06/2028 गुरु 13/11/2028 शनि 26/04/2029 बुध 19/09/2029 केतु 19/11/2029	सूर्य 04/12/2029 चंद्र 30/12/2029 मंगल 17/01/2030 राहु 05/03/2030 गुरु 15/04/2030 शनि 03/06/2030 बुध 17/07/2030 केतु 04/08/2030 शुक्र 25/09/2030	चंद्र 07/11/2030 मंगल 08/12/2030 राहु 23/02/2031 गुरु 03/05/2031 शनि 24/07/2031 बुध 05/10/2031 केतु 05/11/2031 शुक्र 30/01/2032 सूर्य 25/02/2032
बुध - मंगल 25/02/2032 21/02/2033	बुध - राहु 21/02/2033 10/09/2035	बुध - गुरु 10/09/2035 16/12/2037	बुध - शनि 16/12/2037 25/08/2040	केतु - केतु 25/08/2040 21/01/2041
मंगल 17/03/2032 राहु 10/05/2032 गुरु 27/06/2032 शनि 24/08/2032 बुध 14/10/2032 केतु 04/11/2032 शुक्र 04/01/2033 सूर्य 22/01/2033 चंद्र 21/02/2033	राहु 11/07/2033 गुरु 12/11/2033 शनि 08/04/2034 बुध 18/08/2034 केतु 11/10/2034 शुक्र 16/03/2035 सूर्य 01/05/2035 चंद्र 18/07/2035 मंगल 10/09/2035	गुरु 30/12/2035 शनि 09/05/2036 बुध 03/09/2036 केतु 21/10/2036 शुक्र 08/03/2037 सूर्य 19/04/2037 चंद्र 27/06/2037 मंगल 14/08/2037 राहु 16/12/2037	शनि 21/05/2038 बुध 07/10/2038 केतु 03/12/2038 शुक्र 16/05/2039 सूर्य 04/07/2039 चंद्र 24/09/2039 मंगल 21/11/2039 राहु 16/04/2040 गुरु 25/08/2040	केतु 03/09/2040 शुक्र 28/09/2040 सूर्य 05/10/2040 चंद्र 18/10/2040 मंगल 26/10/2040 राहु 18/11/2040 गुरु 08/12/2040 शनि 31/12/2040 बुध 21/01/2041
केतु - शुक्र 21/01/2041 24/03/2042	केतु - सूर्य 24/03/2042 29/07/2042	केतु - चंद्र 29/07/2042 27/02/2043	केतु - मंगल 27/02/2043 27/07/2043	केतु - राहु 27/07/2043 13/08/2044
शुक्र 02/04/2041 सूर्य 24/04/2041 चंद्र 29/05/2041 मंगल 23/06/2041 राहु 26/08/2041 गुरु 22/10/2041 शनि 28/12/2041 बुध 27/02/2042 केतु 24/03/2042	सूर्य 30/03/2042 चंद्र 10/04/2042 मंगल 17/04/2042 राहु 06/05/2042 गुरु 23/05/2042 शनि 13/06/2042 बुध 01/07/2042 केतु 08/07/2042 शुक्र 29/07/2042	चंद्र 16/08/2042 मंगल 29/08/2042 राहु 30/09/2042 गुरु 28/10/2042 शनि 01/12/2042 बुध 31/12/2042 केतु 12/01/2043 शुक्र 17/02/2043 सूर्य 27/02/2043	मंगल 08/03/2043 राहु 31/03/2043 गुरु 19/04/2043 शनि 13/05/2043 बुध 03/06/2043 केतु 12/06/2043 शुक्र 07/07/2043 सूर्य 14/07/2043 चंद्र 27/07/2043	राहु 22/09/2043 गुरु 12/11/2043 शनि 12/01/2044 बुध 06/03/2044 केतु 29/03/2044 शुक्र 01/06/2044 सूर्य 20/06/2044 चंद्र 22/07/2044 मंगल 13/08/2044

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - गुरु 13/08/2044 20/07/2045	केतु - शनि 20/07/2045 29/08/2046	केतु - बुध 29/08/2046 26/08/2047	शुक्र - शुक्र 26/08/2047 26/12/2050	शुक्र - सूर्य 26/12/2050 26/12/2051
गुरु 28/09/2044 शनि 21/11/2044 बुध 08/01/2045 केतु 28/01/2045 शुक्र 26/03/2045 सूर्य 12/04/2045 चंद्र 10/05/2045 मंगल 30/05/2045 राहु 20/07/2045	शनि 22/09/2045 बुध 18/11/2045 केतु 12/12/2045 शुक्र 18/02/2046 सूर्य 10/03/2046 चंद्र 13/04/2046 मंगल 06/05/2046 राहु 06/07/2046 गुरु 29/08/2046	बुध 19/10/2046 केतु 09/11/2046 शुक्र 09/01/2047 सूर्य 27/01/2047 चंद्र 26/02/2047 मंगल 19/03/2047 राहु 12/05/2047 गुरु 30/06/2047 शनि 26/08/2047	शुक्र 16/03/2048 सूर्य 16/05/2048 चंद्र 25/08/2048 मंगल 04/11/2048 राहु 06/05/2049 गुरु 15/10/2049 शनि 26/04/2050 बुध 15/10/2050 केतु 26/12/2050	सूर्य 13/01/2051 चंद्र 12/02/2051 मंगल 06/03/2051 राहु 29/04/2051 गुरु 17/06/2051 शनि 14/08/2051 बुध 05/10/2051 केतु 26/10/2051 शुक्र 26/12/2051
शुक्र - चंद्र 26/12/2051 26/08/2053	शुक्र - मंगल 26/08/2053 26/10/2054	शुक्र - राहु 26/10/2054 25/10/2057	शुक्र - गुरु 25/10/2057 25/06/2060	शुक्र - शनि 25/06/2060 26/08/2063
चंद्र 14/02/2052 मंगल 21/03/2052 राहु 20/06/2052 गुरु 09/09/2052 शनि 15/12/2052 बुध 11/03/2053 केतु 16/04/2053 शुक्र 26/07/2053 सूर्य 26/08/2053	मंगल 19/09/2053 राहु 22/11/2053 गुरु 18/01/2054 शनि 27/03/2054 बुध 26/05/2054 केतु 20/06/2054 शुक्र 30/08/2054 सूर्य 20/09/2054 चंद्र 26/10/2054	राहु 08/04/2055 गुरु 01/09/2055 शनि 22/02/2056 बुध 26/07/2056 केतु 28/09/2056 शुक्र 29/03/2057 सूर्य 23/05/2057 चंद्र 22/08/2057 मंगल 25/10/2057	गुरु 04/03/2058 शनि 05/08/2058 बुध 21/12/2058 केतु 16/02/2059 शुक्र 29/07/2059 सूर्य 15/09/2059 चंद्र 05/12/2059 मंगल 31/01/2060 राहु 25/06/2060	शनि 26/12/2060 बुध 07/06/2061 केतु 14/08/2061 शुक्र 23/02/2062 सूर्य 21/04/2062 चंद्र 27/07/2062 मंगल 02/10/2062 राहु 25/03/2063 गुरु 26/08/2063
शुक्र - बुध 26/08/2063 26/06/2066	शुक्र - केतु 26/06/2066 26/08/2067	सूर्य - सूर्य 26/08/2067 14/12/2067	सूर्य - चंद्र 14/12/2067 13/06/2068	सूर्य - मंगल 13/06/2068 19/10/2068
बुध 20/01/2064 केतु 20/03/2064 शुक्र 08/09/2064 सूर्य 30/10/2064 चंद्र 24/01/2065 मंगल 26/03/2065 राहु 28/08/2065 गुरु 13/01/2066 शनि 26/06/2066	केतु 21/07/2066 शुक्र 30/09/2066 सूर्य 21/10/2066 चंद्र 26/11/2066 मंगल 20/12/2066 राहु 22/02/2067 गुरु 20/04/2067 शनि 27/06/2067 बुध 26/08/2067	सूर्य 31/08/2067 चंद्र 10/09/2067 मंगल 16/09/2067 राहु 02/10/2067 गुरु 17/10/2067 शनि 03/11/2067 बुध 19/11/2067 केतु 25/11/2067 शुक्र 14/12/2067	चंद्र 29/12/2067 मंगल 08/01/2068 राहु 05/02/2068 गुरु 29/02/2068 शनि 29/03/2068 बुध 24/04/2068 केतु 05/05/2068 शुक्र 04/06/2068 सूर्य 13/06/2068	मंगल 21/06/2068 राहु 10/07/2068 गुरु 27/07/2068 शनि 16/08/2068 बुध 03/09/2068 केतु 11/09/2068 शुक्र 02/10/2068 सूर्य 08/10/2068 चंद्र 19/10/2068



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	6
मित्र अंक	1, 2, 8, 6
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध



FUTUREPOINT
Astro Solutions

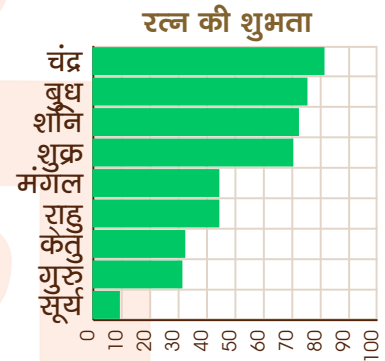


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	81%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	75%	धनार्जन, भाग्योदय, कम खर्च
नीलम	शनि	72%	शत्रु व रोग मुक्ति, सुख, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	70%	व्यावसायिक उन्नति, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	44%	व्यावसायिक हानि, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि
गोमेद	राहु	44%	व्यय, हानि
लहसुनिया	केतु	32%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि
पुखराज	गुरु	31%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
माणिक्य	सूर्य	9%	व्यय, हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	25/08/2004	22%	88%	53%	62%	53%	58%	72%	44%	32%
शनि	26/08/2023	0%	69%	19%	81%	31%	77%	84%	53%	7%
बुध	25/08/2040	22%	69%	44%	88%	31%	77%	72%	44%	32%
केतु	26/08/2047	0%	69%	53%	75%	31%	77%	59%	19%	53%
शुक्र	26/08/2067	0%	69%	44%	81%	31%	83%	78%	53%	44%
सूर्य	26/08/2073	34%	88%	53%	75%	43%	58%	59%	19%	7%
चंद्र	26/08/2083	22%	94%	44%	81%	31%	70%	72%	19%	7%
मंगल	26/08/2090	22%	88%	59%	62%	43%	70%	72%	19%	44%
राहु	26/08/2108	0%	69%	19%	75%	31%	77%	78%	60%	7%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/09/1996-17/04/1998	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया

फल

शुभ
सम
अशुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

शत्रु व रोग
दुर्घटना से बचाव
कम खर्च
सुख
सन्तति सुख



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव में है। यह भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराकमी व्यक्ति होंगे। अपने कार्य क्षेत्र में सर्वदा उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही आप अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर किसी उच्च प्रशासनिक पद इंजीनियरिंग, मेडिकल या होटल आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीय पुरुष समझे जाएंगे। आप अपने कार्यों के द्वारा विशिष्ट सम्मान एवं ख्याति भी अर्जित करेंगे। आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आपको वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप भी उनकी आज्ञा का अनुपालन करेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पितृ या गर्भी से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप परिश्रम एवं उत्साह से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगे तथा आनन्द पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगे। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे परन्तु माता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप उनको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा साथ ही संतति की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपकी बुद्धि में भी यदा कदा उग्रता का भाव विद्यमान रहेगा लेकिन आप अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको न्यूनाधिक सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक प्रभावी व्यक्ति होंगे। जीवन में

धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से सर्वदा युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगे जिससे परिवार में शान्ति तथा सन्तुष्टि रहेगी। इसके अतिरिक्त सभी लोग आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहु ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता है। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते हैं। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप में हाजिर जवाब क्षमता अद्भुत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मृत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता है। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव है। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता है। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता है।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्ठेश व तृतीयेश हैं। षष्ठेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखे की स्थिति उत्पन्न कर सकता है।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन-संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता है। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता है। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते हैं।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपत्तिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता है।

आपकी कुंडली के छठे भाव में केतु स्थित हैं, आप अपने शत्रुओं पर हावी रहेंगे, वात सम्बन्धी रोग शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते हैं, भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित हो सकते हैं, अत्यधिक बोलने वाले, तथा ननिहाल पक्ष से अपमानित हो सकते हैं। आप अल्पकालीन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उत्तम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से

शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

राहु आपके द्वादश भाव में स्थित है, राहु की यह स्थिति आपको अवनति का कारण बन सकती है, आप शत्रुहंता बनेंगे। आप नीच प्रवृत्तियुक्त, कपटी, कुटिल, नेत्ररोगी, असत्यभाषी, दुराचारी, पत्नी की चिंता से ग्रस्त, दुष्ट संगती में धन का अपव्यय करने वाला हो सकते हैं। धानार्जन तथा व्यय दोनों ही अधिक होते हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 5, 7, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे प्रभावित रहते हैं। इनकी प्रवृत्ति हास्य प्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में प्रबल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दर दृश्यों एवं वस्तुओं के प्रति भी इनमें आकर्षण रहता है। स्वभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते हैं तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे समाज में ये सम्मानित प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध रहते हैं। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा अच्छे कार्यों से ये अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। नीति ज्ञान में ये चतुर होते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में इनको नेतृत्व प्राप्त हो जाता है परन्तु इनका कोई निश्चित सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार ये परिवर्तन करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौष्ठव व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपकी प्रवृत्ति हास्यप्रिय होगी तथा गम्भीरता आपको विशेष अच्छी नहीं लगेगी। बच्चों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा प्राकृतिक दृश्यों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा। साथ ही कला से आपका भावनात्मक सम्बन्ध रहेगा।

आप सभी लोगों से समानता का व्यवहार करेंगे तथा आपके मन में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रहेगा अपने कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी एवं सहयोगी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप किसी नवीन सिद्धांत या ग्रन्थ आदि की भी रचना कर सकते हैं जिससे आपको यश की प्राप्ति होगी।

लग्न में लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलताएं भी मिलती रहेंगी। आपकी प्रवृत्ति विलासी होगी तथा भौतिकता के प्रति अत्यधिक आकर्षण रहेगा जिससे आपकी प्रवृत्ति काफी व्ययशील होगी। आपकी प्रवृत्ति भ्रमण प्रिय होगी तथा यात्रा आदि भी समय समय पर सम्पन्न करते रहेंगे। कला एवं संगीत में आप निपुण होंगे तथा कार्य करने में अत्यंत ही दक्ष होंगे।

आप में सहनशीलता का भाव विद्यमान होगा तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता की प्रतीक्षा करने में समर्थ होंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको समय समय पर धनार्जन होता रहेगा। आप में शारीरिक बल की भी प्रचुरता रहेगी फलतः परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करके आप जीवन में मनोवांछित सफलताओं को अर्जित करेंगे जिससे समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपका आदर करेंगे। साथ ही यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कृत्यों को नियमपूर्वक सम्पन्न करेंगे। जिससे आपको मानसिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के

मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न तथा धातुओं को आप अपनी योग्यता तथा लगन से अर्जित करने में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी रुचि जायदाद या भूमि संबंधी कय विकय या सम्बन्धित कार्यों में रहेगी जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा परिवार के सहयोग से जीवन में इच्छित उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। लेकिन आपात्काल में स्वयं को व्यवस्थित करने में असुविधा की अनुभूति करेंगे।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा कार्यों में आप सतत यत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक शान्ति एवं सुख संसाधनों पर काफी व्यय करेंगे जिससे वे लोग सन्तुष्ट रह सकें। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को तर्क पूर्ण वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसे लोग सहमत भी रहेंगे। मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा इसके भक्षण से आपको किंचित प्रसन्नता प्राप्त होगी लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकते हैं इसके अतिरिक्त धार्मिक परम्पराओं का आप पूर्ण पालन करेंगे तथा शुभ एवं मंगल कार्य भी समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरुषों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे। आपको आधुनिक सुख-संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आदरणीय व्यक्ति माने जायेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसके स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। विवाह के बाद पत्नी के प्रभाव या सहयोग से भी आपको वांछित चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको समय समय पर धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती रहेगी। आप चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होंगे। अतः इन पर आप इच्छित निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। आप भी व्यक्तिगत रूप से इसके आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होंगे। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी आप युक्त होंगे तथा इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माताजी सुन्दर, शिक्षित, बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों का मर्जी से लालन पालन करेंगी जिससे सभी लोग उनको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी उन्नति में भी उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगे तथा सुख-दुःख में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में आपकी प्रारंभ से ही रुचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक लेकर परीक्षाएं उत्तीर्ण करेंगे। स्नातक परीक्षा भी आप संतोष जनक रूप से उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में उत्साह के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य में भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए स्वयं को तैयार करेंगे। स्वजनों एवं संबंधियों से भी आप वांछित आदर, स्नेह एवं प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। तथा चन्द्रमा भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक एवं अन्य कार्यों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करके उन्हें वांछित सफलता अर्जित करेंगे। इससे अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगे तथा यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। चन्द्रमा की पंचमस्थ स्थिति के प्रभाव से आप की वैदिक साहित्य एवं धर्म के प्रति रुचि होगी तथा यत्नपूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे तथा इसका आपको काफी ज्ञान होगा साथ ही आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं साहित्य में भी अभिरुचि होगी कविता के प्रति आप विशेष रुचिशील होंगे तथा इस क्षेत्र में आप वांछित प्रतिष्ठा एवं सम्मान भी अर्जित करेंगे अतः समाज में एक विद्वान के रूप में आपकी छवि होगी।

पंचमभाव में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी। चन्द्रमा मन का कारक ग्रह है अतः प्रेम- प्रसंग आपको मानसिक सन्तुष्टि प्रदान करेंगे। प्रेम में आपका भावनात्मक आकर्षण अधिक रहेगा एवं यदा-कदा प्रेम में भावुकता का भी प्रदर्शन करेंगे। लेकिन इस क्षेत्र में आपको मर्यादा एवं नैतिकता का विशेष ध्यान रखना पड़ेगा तभी आपको वास्तविक प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि मिल सकती है।

सन्तति भाव में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा सन्तति में कन्याओं की संख्या पुत्र से अधिक होगी। आपकी सन्तति बुद्धिमान, विनम्र स्वभाव योग्य एवं महत्वाकांक्षी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान एवं आदर का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा पालन में सर्वदा तत्पर रहेंगे साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परस्पर सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगे। पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनका विशेष लगाव होगा तथा अपनी समस्याओं का समाधान माता के माध्यम से ही सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में वे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली होंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति योग्य एवं प्रतिभाशाली रहेगी तथा प्रारंभ से ही वे इस क्षेत्र में काफी उन्नति एवं सफलता का प्रदर्शन करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दीक्षा का उचित प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा दिलाएंगे जिससे भविष्य में अच्छी उन्नति करेंगे तथा उनकी ओर से आपको कोई चिन्ता नहीं रहेंगी। अन्य सामाजिक जन भी उनके व्यवहार एवं कार्य- कलापों से प्रभावित रहेंगे तथा उन्हें वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन देंगे। इससे आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सन्तति पर गर्व होगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी उत्साही पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है। शुक्र के प्रभाव से वह आधुनिक विचार धाराओं से युक्त सुन्दर एवं कला प्रेमी होता है एवं स्वभाव में भी विनम्रता एवं सुशीलता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी विनम्र स्वभाव की महिला होंगी आधुनिकता के भावों की उनमें प्रबलता होगी तथा भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों की प्रति विशेष रुचि होगी। अपने संभाषण में वह मधुर शब्दों का उपयोग करेंगी। शुक्र के प्रभाव से उनके कर्तव्य परायणता भी होगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर एवं आकर्षक वर्ण की दर्शनीय महिला होंगी तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा शरीर के अंग प्रत्यंगों की पुष्टता के कारण सौन्दर्य में आकर्षण की वृद्धि होगी तथा उनके व्यक्तित्व में भी निखार आएगा साथ ही सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का मुक्त रूप से उपयोग करेंगी एवं सुंदर तथा आकर्षक परिधानों से सुसज्जित होंगी संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह किसी समीपी महिला संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रबल आकर्षण तथा प्रेम की भावना रहेगी। सांसारिक महत्व के कार्यों को परस्पर सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे इससे समानता तथा विश्वसनीयता के भाव में वृद्धि होगी। आप दोनों शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा जीवन में सिद्धांतों में भी समानता रहेगी फलतः आपसी संबंधों में मधुरता के कारण जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका ससुराल किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा सामाजिक रूप से भी उनकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी। सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण स्नेह की प्राप्ति होगी। आप भी उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा का भाव रहेगा एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मधुर वाणी से प्रसन्न रखेंगी तथा उनसे वांछित सम्मान मिलेगा जिससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी। यदि स्त्री या स्त्रीवर्ग से साझेदारी की जाये तो आपको विशिष्ट उपलब्धियां मिलेंगी तथा आपस में विश्वसनीयता का भाव भी बना रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। साथ ही शुक्र भी दशमभाव में ही स्थित है। कर्क राशि एवं शुक्र दोनों जलतत्व प्रधान है अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा इसमें आप सतत उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। इसमें आप समय समय पर परिवर्तन भी करते रहेंगे। ऐसे सामायिक परिवर्तनों से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी जिससे मानसिक सन्तुष्टि तथा प्रसन्नता बनी रहेगी।

दशमभाव में कर्क राशि में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र कला संगीत, सिनेमा, दूरदर्शन आदि में कलाकार, इलेक्ट्रॉनिक्स का क्षेत्र, न्याय विभाग यथा वकील, न्यायाधीश, न्यायलयीय कर्मचारी, सचिव, सलाहकार, फिल्म निदेशक, जहाजरानी विभाग, जलसेना आदि शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों एवं विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उन्नति के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त विभागों में ही अपनी आजीविका कार्य का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए चांदी सोना आदि धातु कार्य चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, आलंकारिक एवं मूल्यवान वस्त्रों तथा सौन्दर्य प्रसाधनों का व्यापार आयात निर्यात संबंधी व्यापार, रेशमी वस्त्र, मूल्यवान मदिरा आदि का व्यापार शुभ एवं अनुकूल रहेगा। साथ ही फिल्म निर्माण या वितरण के क्षेत्र में भी आप लाभ एवं धन अर्जित कर सकते हैं। अतः आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही व्यापार प्रारंभ करना चाहिए।

दशमभाव में शुक्र के प्रभाव से जीवन में आप इच्छित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद भी प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा वांछित आदर भी प्रदान करेंगे। आप सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं तथा क्लबों आदि में भी किसी सम्मानित एवं उच्चपदाधिकारी के रूप में मनोनीत हो सकते हैं जिससे आप इच्छित सम्मान अर्जित करेंगे एवं समाज में दूर दूर तक आपकी प्रतिष्ठा व्याप्त होगी।

आपके पिता सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी शिक्षित बुद्धिमान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करके उन्हें वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य एवं अपनत्व का भाव होगा तथा शिक्षा की समुचित व्यवस्था करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा। आप भी अपनी बुद्धिमता एवं उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंधों में मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक समानता भी रहेगी। इसके अतिरिक्त जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे के सहयोग से सम्पन्न करेंगे जिससे आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु छठे भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि छठे भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुअष्टम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि नवम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि दशम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि नवम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु मई के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। वर्षारम्भ में आप परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। अष्टम स्थान के गुरुआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के योग बना रहे हैं। कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे व्यवसाय को ही और सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं।

14 मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आप कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें भाग्य आपका साथ देगा। छठे स्थान के शनि आपके शत्रुओं का दमन करते हुए आपके ब्राण्ड नेम को ऊपर ले जा सकते हैं, जिससे आपके व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ भी प्राप्त होगा। अचल संपत्तित के साथ-साथ वाहनादि का भी सुख प्राप्त होगा।

मई के बाद नवम स्थान का गुरुआपकी आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। उस समय आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत कर सकते हैं। मांगलिक कार्यों या सामाजिक कार्यों एवं बच्चे की उच्च शिक्षा पर आप का धन खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरुकी दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। घरेलू वातावरण अच्छा रहेगा परन्तु सप्तमस्थ शनि की दृष्टि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब कर सकती है या किसी कार्यवश आप पत्नी से दूर रह सकते हैं।

14 मई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे जिससे समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई बहनों का सहयोग प्राप्त होगा।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति करेंगे। गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय उच्च शिक्षा प्राप्ति के शुभ योग हैं।

मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपकी संतान का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। यह समय गर्भाधान के लिए अशुभ है साथ ही गर्भवती महिलाओं को विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की आवश्यकता है।

14 मई के बाद लग्न स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। धार्मिक कृत्यों में अधिक रुचि बढ़ेगी तथा आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सफलता प्रदायक रहेगा। वर्षारम्भ में छठे स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं उनके लिए समय शुभ है। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओं को छोड़कर आगे निकलेंगे। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल जायेगा। मई के बाद समय और अनुकूल हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

14 मई के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगे। नवमस्थ गुरुके प्रभाव से धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी, परन्तु 14 मई के बाद आपका मन धार्मिक कार्यों में आकृष्ट होगा।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरुव मंदिर के पुजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमेंचतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरुनवम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंदशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादशभाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़िया रहेगा। आप अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। गुरु एवं शनि ग्रह का अनुकूल स्थान में होने से आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है।

02 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुविधा पर भी खर्च करेंगे। बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

02 जून के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों केमांगलिक कार्यों में भी धन का व्यय होगा। 31 अक्टूबर के बाद धनागम में वृद्धि होगी। जिससे आप आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से सामाजिक उत्थान के लिए आपका पूर्ण प्रयास रहेगा।

02 जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और आपसी आकर्षण भी बढ़ेगा। पिताजी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उसकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

02 जून के बाद समय अधिक प्रभावित हो रहा है। उस समय पंचमस्थ राहु संतान संबंधित परेशानि उत्पन्न कर सकता है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। इस समय के अंतराल में बच्चे के स्वास्थ्य से संबंधित कोई भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 31 अक्टूबर के बाद आपके बच्चों का उन्नति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें। कभी कभी स्वस्थ रहते हुए भी कमजोरी जैसा अनुभव होता रहेगा। रात को जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठकर घूमना आपके शरीर के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

02 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु उनकी शिक्षा में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। 02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म स्थल की यात्रा हो सकती है अथवा अपने पूरे परिवार सहित दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आप कोई विशेष अनुष्ठान संपन्न करेंगे। आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप दान पुण्य व गरीबों की सहायता अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एकनारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि छे भव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं सप्तम भव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं छे भव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष चतुर्थ भव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं दशम भव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं एकादश भव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं एकादश भव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं या किसी अनुभवी व्यक्ति से मिल कर अपने व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना भी बना सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अधिक लाभ प्राप्त नहीं होगा।

जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्य व्यवसाय में उत्तम वृद्धि होगी। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। सफलता के पीछे आपकी पत्नी का पूर्ण सहयोग होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके शत्रु पक्ष से आपको धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका रुको हुआ धन मिल सकता है व धनागम में वृद्धि होगी। इस समय कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धन संचित करने में आपकी पत्नी का अहम सहयोग होगा। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर भी धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में विषमता की स्थिति बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार पारिवारिक वातावरण अनुकूल करने की कोशिश करेंगे और आप सफल भी होंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है।

दशमस्थ गुरु के कारण आपको पिता का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगों में सफलता मिलेगी। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। विवाहित व्यक्तियों का धर्मपत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। 26 नवम्बर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। इस समयान्तराल में सन्तान पर अधिक ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर और भी शुभ हो रहा है, लेकिन साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक परेशानी या शारीरिक आलस्यता बढ़ सकती है, जिसके फलस्वरूप आप बीमार हो सकते हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में नौकरी भी मिल सकती है।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से अपने जन्म स्थल से दूर की यात्रा हो सकती है। स्थान परिवर्तन के योग भी बन रहे हैं। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

जून के बाद छोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्षान्त में जलीय स्थल या समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। चतुर्थ राहु के प्रभाव से आपके नित्य नैमित्य पूजा प्रभावित हो सकती है। 26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। परन्तु छठे स्थान का शनि आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएगा। फरवरी के बाद बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं तो सफलता मिलेगी। चतुर्थ स्थान का राहु नौकरी करने वाले जातकों का स्थान परिवर्तन करा सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः आपको सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं। पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। 28 फरवरी से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपके आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करे। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देंगे, जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सकती है। साथ ही परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं, नहीं तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका अच्छा संबंध बना रहेगा। फरवरी से आपको भाईयों सहयोग मिलेगा।

24 मई से घरेलू वातावरण अच्छा होना शुरू हो जाएगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः उनको स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं बरतनी चाहिए।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है जिसके बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा।

आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 जुलाई के बाद बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर से सम्बन्धित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को पछाड़कर अपने करियर में आगे बढ़ेंगे। फरवरी के बाद से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत उत्तम है। तकनीकी शिक्षा अथवा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपकी शिक्षा में रुकावटें आ

सकती हैं। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 23 फरवरी के बाद लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। फरवरी के बाद एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में रुचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। जैसे- माता का जागरण, चौकी, अखण्ड रामायण पाठ इत्यादि।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें। बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 29 मार्च से कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। गुप्त शत्रुओं द्वारा कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से बहुत अच्छा हो रहा है। आपको व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलना शुरू हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण उन्नति के श्रेष्ठ योग बन रहे हैं। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। आपके मित्र आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। सट्टा, शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा रहेगा। आय में अनुकूलता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए। कुछ खर्च अचानक आपकी आर्थिक स्थिति को बिगाड़ सकते हैं। अतः अभी से अतिरिक्त धन का संचय कर सकते हैं।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आप के रुके हुए पैसे मिल सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरू हो जाएगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। छोटे भाईयों का

अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वेमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। परिवार में कुछ लोगों का वर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेने होगा। 25 अगस्त के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

05 अगस्त के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक का समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद का समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि आपकी सेहत के लिए उत्तम है। यदि आप बीमार भी होते हैं तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद अचानक आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप परेशान हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी बचें।

25 अगस्त के बाद स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यवसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप पढ़ाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से वर्षारम्भ से ही छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। ज्यादातर यात्राएं अचानक होंगी। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं।

25 अगस्त के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत बरतें, क्योंकि अष्टम स्थान का शनि यात्रा के लिए शुभ नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीब व्यक्ति को दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

